Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 12 | SPECIAL ISSUE DECEMBER-2024

बी.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण अभिक्षमता, शिक्षण अभिवृत्ति एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. अनिल कुमार यादव	विभागाध्यक्ष शिक्षक-शिक्षा, संकाय जे.एस. यूनिवर्सिटी, सिकोहाबाद (उ.प्र.)
छाया सिंह	शोधार्थी, शिक्षक-शिक्षा संकाय जे.एस. यूनिवर्सिटी, शिकोहाबाद (उ.प्र.)

ABSTRACT:

-

KEYWORDS:

-

प्रस्तावना

"उच्चतम शिक्षा वह है हमें केवल ज्ञान ही नहीं देती बल्कि हमारे जीवन के समस्त पहुलओं के समन्वय उपस्थित करती है।"

- टैगोर

शिक्षा, मनोवृत्तियों, मूल्यों, ज्ञान तथा कौषल के विकास के द्वारा मनुष्य तथा समाज का विकास करती है, मानव संसाधनों का विकास शिक्षा के माध्यम से ही हो सकता है। षिक्षा को मानव जीवन का स्तंभ माना गया है। यह मनुष्य के जीवन को सार्थक बनाती है। शिक्षा समाज की आधारशिला है, समाज में जिस प्रकार की शिक्षा होगी, उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा।

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में अनेक समस्याएँ हैं। वैसे तो संपूर्ण मानव समाज समस्याओं से भरा हुआ है। मानव प्राणी इस संसार में अपनी सुरक्षा और सुस्थिति के लिए समस्याओं से संघर्ष करता हुआ आगे बढ़ता है। सभी प्राणी जन्म लेने के बाद से ही अपनी परिस्थिति के अनुकूल कर्म करते रहते हैं। इस प्रकार कर्म के लिए मानव प्राणी को सोचना पड़ता है या उस कर्म की पूर्ति के लिए षिक्षा लेनी पड़ती है। जिसके फलस्वरूप उसे ज्ञान तथा अनुभव मिलता है। शिक्षक उसे सूचित करता है "अपने आप के लिए, अपने आगे आने वाली संतानों के लिए तथा अपने समूहों के लिए जिनके साथ वह रहता है के विकास हेतु शिक्षित होना आवश्यक है।"

लोकतांत्रिकयुग में तो षिक्षा उन्नति का साधन एवं आधार है तथा शिक्षा के कारण ही नागरिक अपने कर्त्तव्य को समझते हैं और उत्तरदायित्व को पूरा करते हैं। प्राचीनकाल में भी शिक्षा की उपादेयता, महत्ता एवं आवश्यकता स्वीकार की गयी थी। शिक्षा, उस समय भी मानव के लिए आवश्यक थी। यही कारण है कि साधारण जनता से लेकर बड़े-बड़े दार्शनिक, शिक्षा शास्त्री, शिक्षाविद् एवं राजकीय महापुरूष इस पर विचार करते रहे हैं।

वर्तमान समय में हमारे देश की जनसंख्या वृद्धि के साथ ही साथ शिक्षित लोगों की संख्या में भी दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है। शिक्षा प्रसार के साथ ही साथ देश में खुलने वाले विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की संख्या में भी उत्तरोत्तर वृद्धि होती जा रही हैं, वर्तमान समय में शिक्षा बहुउद्देशीय बन गयी है। शिक्षा को मानव जीवन के समस्त उद्देश्यों की पूर्ति का साधन माना गया है।

जन ज्ञान के विकास के साथ ही साथ शिक्षा का क्षेत्र भी उत्तरोत्तर विकसित होता जा रहा है। शिक्षा मानव विकास का नाम है। मानव विकास की अनेक अवस्थायें होती हैं। इन अवस्थायें में बालक स्वाभाविक रूप से विकसित होता है पर कुशल माली की तरह शिक्षक उसका संशोधन करता है। यह संशोधन उसमें मानवीय गुणों का विकास करता है।

विद्वानों ने शिक्षा प्रक्रिया के तीन अंगों को माना है यथा- शिक्षक, शिक्षार्थी, विषय सामग्री या पाठ्यक्रम इन तीनों अंगों में शिक्षक का स्थान प्रमुख है। माना गया है कि अध्यापक ही शिक्षा के द्वारा समाज में बालकों के विकास की रूपरेखा निश्चित कर उसे कार्य रूप में परिवर्तित करता है। बालकों के बनने एवं बिगड़ने का संपूर्ण दायित्व अध्यापक पर होता है। इसलिए अध्यापन व्यवसाय को विशेष महत्व दिया गया है। प्राचीन समय में शिक्षक ही शिक्षा का सर्वेसर्वा माना जाता था और वही

शिक्षा का स्वरूप सुनिष्चित करने का अधिकारी होता था। मध्यकाल में भी धर्म शिक्षकों का बोलबाला था। वर्तमान तकनीकी उन्नति के युग में प्रत्येक शिक्षक के लिए यह अनिवार्य हो गया है कि वह मात्र अपने विाय ज्ञान तक ही सीमित न रहे, प्रभावशाली शिक्षण हेतु अन्य विषयों पर भी उसकी पकड़ आवश्यक है साथ ही अध्यापन अभिक्षमता, में शिक्षण कार्य में रूचि, शिक्षण व्यवसाय के प्रति अपने नैतिक दायित्व का बोध होना भी अनिवार्य है तभी वह एक अच्छे शिक्षक के रूप में पहचाना जायेगा। वर्तमान में योग्य व्यक्ति, कम आमदनी व प्रतिष्ठा के कारण शिक्षण व्यवसाय को अपनाना नहीं चाहते। शिक्षक का दायित्व है कि वह छात्रों की रूचियों, अभिक्षमताओं, योग्यताओं एवं मूल्यों के अनुकूल उपयुक्त शिक्षण विधियों का प्रयोग करें ताकि छात्र वांछित सफलता प्राप्त कर सकें। संभवतः इसीलिए पूर्व में बी.एड. में प्रवेश हेतु व्यवसायिक मंडल द्वारा परीक्षा ली जाती थी।

शिक्षक राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था का सूत्रधार है, राष्ट्रकी शैक्षिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक प्रगति शिक्षक पर आधारित है शिक्षक एक दीपक के समान होता है जो स्वयं जलकर राष्ट्र को प्रकाशित करता है। राष्ट्र का निर्माण शिक्षक के कंधों पर हैं, इसलिए शिक्षक को राष्ट्र का निर्माता कहा गया है।

"अभिक्षमता किसी व्यक्ति के प्रशिक्षण के पश्चात् उसके ज्ञान, दक्षता या प्रतिक्रियाओं को सीखने की योग्यता है।"

-बिंघम

अभिक्षमता के अंतर्गत बुद्धि, कार्यक्षमता योग्यता, व्यक्तित्व, आदि अनेक गुण सम्मिलित हैं। अभिक्षमता की परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि अभिक्षमता व्यक्ति की वर्तमान योग्यता है जिसके बारे में उचित प्रशिक्षण मिलने पर उस योग्यता एवं पूर्वकथन का सकारात्मक विकास किया जा सकता है। शिक्षकों के लिए भी इसका अपना विशिष्ट महत्व है। शिक्षण अभिक्षमता के माध्यम से यह बताया जा सकता है कि प्रशिक्षण के उपरान्त शिक्षक अपने कार्यक्षेत्र में कितने सफल हो सकते हैं। इस शिक्षण अभिक्षमता का शिक्षा के क्षेत्र में विशेष महत्व है क्योंकि इसके माध्यम से शिक्षक, प्रशिक्षक एवं शाला प्रबंधन अपनी शालाओं में उच्च अभिक्षमता वाले प्रशिक्षणार्थियों को रख सकते हैं जिससे कि उनकी शाला के विद्यार्थियों की जहाँ एक ओर उत्तम उपलब्धि होगी वहीं उनके व्यक्तिव का सर्वांगीण विकास होगा जिससे कि देश को अच्छे नागरिक मिल सकेंगे।

अभिक्षमता एक योग्यता नहीं है परन्तु यह निश्चित योग्यताओं के संभावित विकास की भविष्यवाणी करने की सहायता करती है। अभिक्षमता परीक्षण योग्ूताओं एवं दक्षताओं को प्रकट करने में ही परीक्षण का महत्व है।

संप्रत्यात्मक रूपरेखा –

अनुसंधान अध्ययन में तथ्य का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। कोई भी अनुसंधान अध्ययन मनमाने ढंग से मात्र कल्पनाओं की सहायता से नहीं किया जा सकता है।

संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधे के तीर के समान होगा। जब तक उसे ज्ञान न हो कि उसक क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है, तथा उसके निष्कर्ष क्या आए हैं, तब त कवह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को संपन्न कर सकता है।

"किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधाषिला के समान है, जिस पर संपूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की संभावना है।"

-डब्लू.आर. बोर्ग

शिक्षकों की अभिक्षमता संबंधी उपलब्ध अनुसंधानात्मक साहित्य का विवेचन निम्नांकित है-

दुबे राजेष्वरी (1986) ने छात्राध्यापकों की निर्देशात्मक क्षमता का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य शैक्षिक अभिवृत्ति और शैक्षिणक स्केल के बीच संबंध ज्ञात करना था। इस अध्ययन के निष्कर्ष द्वारा ज्ञात हुआ है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों में शैक्षिक अभिवृत्ति एवं अन्य अन्य चरों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है। **मीरा एस. (1988)** ने छात्राध्यापकों की शैक्षिक अभिक्षमता एवं शिक्षक व्यवहार के संबंध का अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य फ्लैण्उर्स प्रविधि द्वारा छात्र-शिक्षकों के कक्षा व्यवहार का अध्ययन, शिक्षक व्यवहार एवं शिक्षक अभिक्षमता के बीच संबंध का अध्ययन, विभिन्न अभिक्षमता के बीच संबंध का अध्ययन, विभिन्न अभिक्षमता कारकों एवं विभिन्न कक्षा व्यवहारों के संबंध का अध्ययन एवं विभिन्न विषयों/विभागों/संकायों के प्रशिक्षित शिक्षकों के बीच शिक्षक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन।

तिवारी जी. (1983) ने महाविद्यालयीन शिक्षकों के लिए शैक्षिक अभिक्षमता परीक्षण का निर्माण किया। इस अध्ययन का उद्देय महिला एवं पुरूष शिक्षकों के बीच शैक्षिक अभिक्षमता का अध्ययन करना। इस अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष पाया गया कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों के बीच सार्थक अंतर नहीं पाया गया। विज्ञान तथा कला समूह के शिक्षकों की तुलना में शैक्षिक अभिक्षमता अधिक पाई गई।

भसीन चंचल (1988) ने आधुनिक समुदाय के संबंध में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति और शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया। प्राप्त परिणामों के अनुसार शिक्षण अभिवृत्ति एवं शिक्षण प्रभावशीलता में धनात्मक सहसंबंध पाया गया। परन्तु इसका प्रत्यक्ष संबंध शिक्षक समुदाय सहभागिता से नहीं प्राप्त हुआ। विज्ञान एवं मानवीय विज्ञान के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में अंतर पाया गया। शासकीय/अशासकीय, शहरी/ग्रामीण पुरूष तथा महिला शिक्षकों की षिक्षण अभिवृत्ति तथा शिक्षण प्रभावशीलता में कोई अंतर नहीं होता है।

अगुल्टाइन जोस (2010) ने शिक्षा मनोविज्ञान में अध्यापन रूचि, योग्यता, शैक्षणिक पृष्ठभूमि एवं उपलब्धियों का अध्ययन किया। इस अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि करीब 75 फीसदी विद्यार्थी, अध्यापक, अध्यापन रूचि एवं विद्वता, योग्यता में औसत से नीचे थे। विभाग, विषयवार तुलना में अध्यापन रूचि में सार्थक अंतर नहीं था तथा उम्मीदवार अध्यापक के अध्यापन रूचि, विद्वता स्तर एवं नैतिकता के मध्य सकारात्मक संबंध पाया गया।

आवष्यकता एवं महत्व -

अभिक्षमता व्यक्ति का मानसिक उपकरण है जो उसके क्षेत्र विशेष की योग्यता दर्शाता है। शिक्षक यदि अपने विद्यार्थियों को दक्षतापूर्वक व प्रभावशाली ढंग से शिक्षित करना चाहते हैं तो आवश्यक है कि वे सबसे पहले स्वयं को व विद्यार्थियों को समझें शिक्षक दिवस से संबंधित विद्वता के आधार पर विद्यार्थियों का आदर्श नहीं बन सकता है वरन् उसके मस्तिष्क को सजग बनाता है। उनका सहयोग व विश्वास प्राप्त करता है। उनकी भावनाओं का सम्मान करता है तब कहीं शिक्षक की सकारात्मक छवि विद्यार्थी के हृदय में जीवन पर्यन्त आदर्श के रूप में अमिट छाप छोड़ देती है।

शिक्षक के उत्तरदायित्व के विषय में कहा है कि एक सफल शिक्षक की अध्यापन अभिक्षमता उच्च स्तर की होनी चाहिए, जिसके द्वारा वह अपने विद्यार्थियों में रूचि पैदा कर सके। उन्हें बुद्धि का उपयोग करना सिखाये, उन्हें जिज्ञासु बनाये तथा उनकी जिज्ञासा को शांत करे। उन्हें जानकारी एकत्रित करने में आनंद प्राप्त करना सिखायें।

शिक्षा का महत्व सभी स्थानों एवं सभी कालों में रहा है किंतु आज जनतांत्रिक समाज में इसका महत्व बहुत अधिक बढ़ गया है साथ ही साथ विज्ञान व तकनीकी के विकास में शिक्षा की महती आवश्यकता है, किन्तु देखने में आता है कि उपयुक्त षिक्षा का अभाव के प्रबंधन और शिक्षकों के चयन में कहीं न कहीं कोई कमी परिलक्षित होती है। शिक्षकों के चयन में केवल उनकी शैक्षिक योग्यता का अवलोकन किया जाता है किंतु उसकी अध्यापन अभिक्षमता एवं नैतिकसील गुणों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है फलस्वरूप उनका अध्यापन कार्य अपेक्षाकृत कम प्रभावशाली होता है। प्रभावशाली शिक्षक हेतु इस इस बिन्दु पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि शिक्षक चयन प्रक्रिया में अध्यापन अभिक्षमता का विशेष ध्यान रखा जाए, जिससे समाज और राष्ट्र का विकास संभव है।

यदि एक व्यक्ति जन्मजात गुणों एवं पर्यावरणीय परिस्थितियों के बीच अंतः क्रियाओं के प्रति उदासीन है और वही शिक्षक बन जाये तो निश्चित ही वह अपने कर्तव्यों के प्रति भी उदासीन ही रहता है।

एक सफल व प्रभावशाली शिक्षक होने के लिए विभिन्न गुणों के साथ-साथ अध्यापन अभिक्षमता का गुण शिक्षक के सफल व प्रभावशाली अध्यापन में सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस लघु शोधा के द्वारा यह जानने का प्रयास किया जा रहा है कि शिक्षकों की अध्यापन अभिक्षमता कितनी हैं? साथ ही यह भी देखने का प्रयास किया जा रहा है कि क्या अशासकीय शिक्षा महाविद्यालय में कोई अंतर है? इसी प्रकार कला, विज्ञान एवं वाणिज्य के छात्र अध्यापक एवं छात्र अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिक्षमता में अंतर का अध्ययन किया जाएगा। इस लघु शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर शिक्षकों के चयन हेतु सुझाव दिये जा सकेंगे, ताकि भविष्य में उच्च अध्यापन अभिक्षमता वाले व्यक्ति ही इस व्यवसाय में आ सकें।

REFERENCES

1. भार्गव, डॉ. महेश, (1997), "अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक आधार" भार्गव बुक डिपो, आगरा ग्यारहवाँ संस्करण 342-254
2. भटनागर सुरेश, "आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन' आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ. 194-200
3. भटनागर, ए.बी. तथा मीनाक्षी, "मनोविज्ञान तथा शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन" सूर्या पब्लिकेशन नवीनतम संस्करण, पृ. 299-301
4. भटनागर, डॉ. ए.बी. (2004) "विज्ञान शिक्षण", आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, चतुर्थ संस्करण, पृष्ठ 3-5
5. माथुर, डॉ. एस.एस. (1998) "शिक्षण कला एवं शैक्षिक तकनीकी" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 15 वाँ संस्करण
6. पाठक पी.डी. "सफल शिक्षण कला", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, नवीनतम संस्करण (1994), पृ. 363-419
7. रहमान ए. "मनोविज्ञान में प्रयोग एवं परीक्षण' पृ. 8-12.

8. राय पारसनाथ एवं सी.पी. (2010-11) ''अनुसंधान परिवय'' लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, तेरहवां संस्करण, पृ. 62-66, 94-96, 232, 285

9. सक्सेना, एन.आर. (2004) ''अध्यापक शिक्षा'' सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ, नवीनतम संस्करण, पृ. 227-251

10. सक्सेना एवं ओबेराय (2004) ''शिक्षण की तकनीकी'', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, नवीनतम संस्करण, पृ. 8